समानार्थी शब्द दोहे से ढूँढ़ लें।

कोई, शूर, संभाला, ढूँढ़ना, धूलि, वर्ण, स्मरण, क्यों, मिला

उत्तर:

कोई = कोय

शुर = सूरमा

संभाला = समाय

ढूँढना = खोजौं

धूली = धूरि

वर्ण = बरन

स्मरण = सुमिरन

क्यों = काहे

मिला = मिलिया

समान आशयवाला चरण दोहे से चुन लें।

a. दूसरा कोई भूखा न रहे।

b. सुख में कोई स्मरण नहीं करता।

c. मैं बुरे लोगों को ढूँढ़ने निकला।

d. हाथी के सिर पर धूलि है।

e. काम, क्रोध और लालच से भक्ति नहीं होती।

उत्तर:

a. साधु न भूखा जाय।

b. सुख में करे न कोय

c. बुरा जो देखन मैं चला

d. हाथी के सिर धूरि

e. कामी, क्रोधी, लालची, इनते भक्ति न कोय

ये तत्व किन-किन दोहों से संबंधित हैं?

a. अहं दूर होने से महत्व बढ़ता है।

b. सुख और दुख में स्मरण करना है।

c. अपने को पहचाननेवाला सच्चा ज्ञानी है।

d. जीवन की शांति सादगी में है।

e. समभाव शूर का लक्षण है।

उत्तर:

a. प्रभुता से प्रभु दूरि

b. जो सुख में सुमिरन करै, तो दुःख काहे होय

c. जो दिल खोजौं आपना, मुझ-सा बुरा न कोय

d. लघुता से प्रभुता मिले

e. भक्ति करै कोई सूरमा।, जाति, बरन कुल खोय।।

‘जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे होय’- अपना विचार प्रकट करें।

उत्तर:

यह दोहा संत कवि कबीरदास का है। निर्गुण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास कहते हैं कि हमें सुख और दुःख दोनों में ईश्वर का स्मरण समभाव से करना चाहिए। मनुष्य साधारणतः केवल दुःख आते समय ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। सुख में ईश्वर से भक्ति रखनेवाला दुर्लभ होता है। कबीर के अभिप्राय में सुख में ईश्वर का स्मरण करनेवाले को दुःख कभी भी नहीं होता। अंधविश्वास को दूर करके सच्छी भक्ति की ओर मन रखने को कबीर इस दोहा द्वारा उपदेश देते हैं।